प्रकृति विज्ञान

संचालित होती है। यही सृष्टि का धर्म है। जिस प्रकार एक वृक्ष का धर्म है फल देना, नदी का धर्म है जल देना। उसी प्रकार मानव समाज का धर्म है अपनी आवश्यकता को सुव्यवसिथत करना। जिस मूल गुण की क्रिया से यह कार्य होता है उसे विज्ञान कहते हैं।

मानव समाज सृष्टि को विज्ञान मानता है, वह अपना कारण विज्ञान नहीं बल्कि किसी और को मानता है जबकि यही विज्ञान मानव समाज का भी कारण है। यदि व्यक्ति एक विज्ञान है तो उसका कारण विज्ञान क्यों नहीं? क्या प्रकृति को संचालित करने वाला कोई और है? नहीं, प्रकृति स्वयं संचालित है। मानव समाज प्रकृति का सबसे विकसित प्राणी है जो अपनी आवश्यकता को महत्व देता है और सृष्टि में जिसे महत्वपूर्ण समझता है उसी को महत्व देता है। जिसे वह धर्म मानता है जो पूरी तरह एक विज्ञान है। जो लोग इसे विज्ञान नहीं मानते हैं उन्हें स्वयं से कुछ प्रश्न कर लेना चाहिए। जिसे अवतारी पुरुष माना जाता है वह पैदा होते ही क्यों नहीं अपना उद्देश्य पूरा कर लेते? ऐसा इसलिए होता है कि उसका शरीर एक विज्ञान है जो एक निश्चित समय पर परिपक्व होता है। तभी वह अपने विरोधी ततव से लड़ने में सक्षम हो जाता है। प्रकृति आवश्यकतानुसार महापुरुष पैदा करती है जो सतय मार्ग पर चलकर प्रकृति का सहयोग प्राप्त कर अन्याय को मिटाता है। यह भी एक विज्ञान है, क्योंकि असत्य का साथ सत्य कभी नहीं दे सकता है। असत्य का साथ सिर्फ [illegible] ही देता है। प्रकृति के उदाहरण से आप जान सकते हैं कि जैसे लोहे का चुम्बक सिर्फ लोहे को ही खीचता है किसी अन्य ततव को नहीं। मानव शरीर द्वारा छोड़ी गई सत्य-असत्य भावना प्रकृति में विचरण करती है, जो व्यक्ति जैसा होता है उसे श्वसन के क्रिया के माध्यम से वैसी ही शक्ति मिलती है, क्या यह विज्ञान नही है? यदि है तो यह प्रकृति का धर्म है। व्यक्ति के शरीर का निर्माण भोजन से होता है पर विचारों का निर्माण प्रकृति से [illegible] भावना से हो[illegible] अंदर श्वास [illegible] करती है। इसे आप [illegible] यह प्रकृति का एक विज्ञान है। शरीर के अंदर असख्य जीवाणु पैदा होते हैं जिनमें कुछ शरीर के लिए सब कुछ कर देते हैं। उन्हीं के सहयोग से शरीर चलायमान होता है पर कुछ जीवाणु ऐसे होते हैं जो शरीर को नुकसान पहुचाते हैं। शरीर के अंदर जीवाणु भावना के अनुसार बनते हैं। यदि मानव समाज अपनी भावना शुद्ध कर ले तो उसी के शरीर को नुकसान पहुंचाने वाले जीवाणु पैदा नहीं होंगे और उसका शरीर स्वस्थ होगा। मानव शरी के अंदर जीवाणु का विशेष महत्व है [illegible] जो जीवाणु शरीर के सहयोगी होते हैं उनके [illegible] हर व्यक्ति को कुछ जान लेना आवश्यक है।द जीवाणु से शरीर का निर्माण तो होता [illegible] विवेक का निर्माण [illegible] प्रकृति के [illegible] निर्माण में भी [illegible] है। इस जीवाणु [illegible] जीवाणु शरीर के अंदर [illegible] और दूसरा जीवाणु [illegible] वाले सहयोग को शरीर [illegible] ही जीवाणु प्रकृति में [illegible] है जो आवश्यकतानुसार [illegible] का सहयोग करते हैं। इसी [illegible] कहा जाता है। शुद्ध [illegible] में भावना का एक महत्व [illegible] पर [illegible] इसके अतिरिक्त [illegible] का भी योगदान है [illegible] गंदगी बढ़ा दीजिए [illegible] जीवाणु उत्पन्न [illegible]। इनकी उत्पत्ति [illegible] प्रकाश की प्रतिक्रिया [illegible] कि सत्य प्रकाश अ[illegible] इतना अधिक नहीं बढ़ने [illegible] सकता है कि एक साथ वह जीव को विनाश कर दे। यदि गंदी गंध अधिक बढ़ जाए तो एक [illegible] जीव का विनाश हो जाता है। इसलिए सत्य प्रकाश उसके [illegible] [illegible]

> **प्रकृति की रक्षा करनी चाहिए। प्रकृति मानव कल्याण का प्रथम सोपान है।**

> **पृथ्वी जो गोल है पर थोड़ी झुकी है। यह झुकाव प्रकृति को गति देने में सहायक होता है।**

सम्पादकीय पृष्ठ से संबंधित अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट पर जाएं
www.suryaashram.com